

- आँचल ठीक करना, शरीर के वस्त्र को व्यवस्थित करना।
- आँचलिक वि.** (तत्.) अंचल-संबंधी, क्षेत्र-विशेष के परिवेश से संबंधित।
- आँचलिकता स्त्री.** (तत्.) क्षेत्र-विशेष के परिवेश की उपस्थिति से संबंध रखने का भाव।
- आँजन पुं.** (तद्.) आँखों में लगाया जाने वाला शृंगार प्रसाधन।
- आँजना स.क्रि.** (तद्.) आँखों को सुरमा अथवा काजल लगाकर सुंदर बनाना।
- आँजनी स्त्री.** (तद्.) आँखों में लगाने का अंजन।
- आँजनेय पुं.** (तत्.) अंजना का पुत्र, हनुमान।
- आँजे वि.** (तद्.) अंजन अथवा सुरमा से सुशोभित।
- आँट पुं.** (देश.) 1. हाथ की तर्जनी और अँगूठे के बीच का स्थान 2. दाँव 3. लाग-डाट 4. गाँठ।
स्त्री. सोना परखने की कसौटी पर, परखने वाली वस्तु की रेखा अथवा चिह्न।
- आँटना अ.क्रि.** (देश.) 1. अटकाना, लगाना 2. भरना, समाना। 3. पूरा पड़ना, पर्याप्त होना।
- आँट-साँट स्त्री.** (देश.) 1. सामान्य मेल-जोल, भागीदारी, साझा 2. षड़यंत्र।
- आँटी 2 स्त्री.** (देश.) 1. कमर में धोती की लपेट, जिसमें पैसे रहते हैं 2. लंबे पौधों या लंबी घास की पूली 3. पूला 4. बच्चों के गुल्ली-डंडे की गुल्ली 5. कुश्ती का एक पेंच 6. सूत का लच्छा 7. टेंट 8. धोती का वह भाग जिसमें पैसे आदि रखे जाते हैं, अंटी।
- आँठी स्त्री.** (देश.) 1. दही, मलाई आदि का लच्छा या थक्का 2. गाँठ 3. गुठली।
- आँड पुं.** (तद्.) 1. मूत्रांग के पीछे लटकने वाला शारीरिक अवयव, अंडकोष 2. तलवार की मूठ के बीच का भाग, आँबिया **वि.** (तत्.) अंडे से उत्पन्न, अंडज।
- आँड़ी स्त्री.** (देश.) 1. गाँठ 2. कंद जैसे प्याज की आँडी 2. पहिए की हाल, पहिए को कसावट में

- रखने के लिए उस पर चढ़ाई जाने वाली लोहे की मोटी पत्ती।
- आँड़ वि.** (तद्.) पशु जो नपुसंक न किया गया हो, अंडुआ।
- आँत स्त्री.** (तद्.) प्राणियों के आहार-नली का वह भाग जो नाभि से गुदा तक होता है; अंतड़ी।
मुहा. आँत उतरना- अंत्र-वृद्धि होना, आँत का बढ़ना- हार्निया रोग होना; आँत कुलबुलाना- भूख से व्याकुल होना; आँते सूखना- भूख के मारे बुरा हाल होना, बहुत भूखा होना; आँतों में चूहों का दंड पेलना- बहुत अधिक भूख लगना।
- आँतरा वि.** (तद्.) 1. अंतर वाला 2. भेद वाला 2. दूरी वाला 3. एक दिन छोड़कर, एक दिन वाला, आन्तरा दिन- अगले दिन के बाद वाला दिन।
- आँथव पुं.** (देश.) अस्त होने का भाव, आथने की क्रिया।
- आँदू पुं.** (देश.) 1. हथकड़ी 2. पैरों में डाली जाने वाली बेड़ी 3. शृंखला, साँकल, जंजीर-सामान्यतया लोहे की।
- आँधना अ.क्रि.** (देश.) वेगवान आक्रमण करना, हल्ला बोलना, टूट पड़ना।
- आँधर वि.** (तद्.) अंधा।
- आँधी स्त्री.** (तद्.) 1. बहुत वेग से चलने वाली हवा जो धूल झाड़ी-झंखाड़ को उड़ाती हुई चले और अंधेरा कर दे, तूफान पर्या. अंधड़, अँधेरी, चक्रवात, झंझा, झंझावात, तूफान, प्रभंजन, बवंडर, वात्या। 2. भारी हलचल **मुहा.** आँधी उठना- हलचल मच जाना; आँधी के आम-बिना परिश्रम से मिली चीज; आँधी में गिरे हुए आम- थोड़े दिन रहने वाली चीज।
- आँब पुं.** (तद्.) आम का वृक्ष और उसका फल।
- आँय-बाँय पुं.** (अनु.) व्यर्थ की बात, अनाप-शनाप, असंबद्ध प्रलाप पर्या. अंडबंड, अनाप-शनाप, आँय-बाँय-शाँय।
- आँव पुं.** (तद्.) आंतों के सफेद रंग के लंबे कीड़े इससे अपच, कमजोरी और बुखार भी होता है।